❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

यत्र सोमः सदमित्तग भद्रम्।
अथर्व. 7/18/2

जहां शान्तिवर्षक परमात्मा है वहां सदा ही कल्याण है।

Wherever is the divine bestower of peace, there is plenty of prosperity & happiness.

वर्ष 41, अंक 10 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 25 दिसम्बर, 2017 से रविवार 31 दिसम्बर, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें– www.thearyasamaj.org/aryasandesh

91वां स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर हजारों की संख्या में उपस्थित होकर दी श्रद्धांजलि

धर्म के नाम पर गैरकानूनी कामों को 'धार्मिक भ्रष्टाचार' की श्रेणी में रखते हुए एक कानून बनाए जाने की मांग

अंधविश्वास को मिटाना एवं देश को बचाना हमारा परम कर्त्तव्य – श्री गंगाप्रसाद, माननीय राज्यपाल मेघालय

मन-मस्तिष्क में वेद विद्या के प्रकाश से होगा अंधविश्वास का अन्धकार खत्म – डॉ. सत्यपाल सिंह, केन्द्रीय राज्य मन्त्री

स्वामी श्रद्धानन्द जी के पद चिन्हों पर चलते हुये व उनके जीवन से प्रेरणा लेते हुये उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने का हर सम्भव प्रयास करेगे – महाशय धर्मपाल

अशिक्षा व गरीबी में पाखण्ड बहुत जल्द अपने पैर पसारने लगता है और इसका लाभ अन्य मत-मतान्तर वाले उठाते हुये वहाँ उन्हें पथभ्रष्ट कर देते हैं – डॉ. कृष्ण गोपाल, सह सरकार्यवाह, रा.स.सं.

राष्ट्र हितैषी स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान देश के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है – श्री धर्मपाल आर्य

अंधविश्वास व पाखण्ड निर्मूलन में महिलाओं को सक्रिय भूमिका निभानी होगी – सुश्री मोनिका अरोड़ा

– शेष पृष्ठ 4-5 एवं 7 पर

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला– 2018 के अवसर पर प्रगति मैदान में

नव दिवसीय वैदिक साहित्य प्रचार–प्रसार महायज्ञ

50 हजार नए व्यक्तियों तक 10/– रु. में सत्यार्थ प्रकाश पहुंचाने का लक्ष्य : अपनी आहुति अवश्य दें

आपकी एक आहुति कर सकती है किसी का जीवन परिवर्तन

स्टाल उद्घाटन	हिन्दी : हॉल नं. 12	बाल साहित्य	मेला समापन
6 जनवरी, 2018 प्रातः 11:30 बजे	स्टाल : 282-291	हॉल नं. 7 स्टाल : 161	14 जनवरी, 2018 रात्रि 8 बजे

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का अमूल्य ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश जोकि 50/– रुपये का है, सभा को 30/– रुपये में प्राप्त होता है। आप द्वारा प्रदान की गई 20/– सब्सिडी (छूट) से इस अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को विश्व पुस्तक मेले के अवसर पर मात्र 10 रुपये में उपलब्ध कराया जाता है। अतः आप सभी दानी महानुभावों एवं आर्य संस्थाओं से से निवेदन है कि अधिकाधिक प्रतियां 10/– में उपलब्ध कराने हेतु अधिकाधिक छूट सहयोग प्रदान करें। इस वर्ष बच्चों के लिए विशेष रूप से स्टाल लिया गया है जहां बच्चों को आर्यसमाज एवं वैदिक संस्कृति से जोड़ने वाला साहित्य प्रचूर मात्रा में उपलब्ध होगा।

स्टाल पर समय दान करने वाले सहयोगी कार्यकर्त्ता अपने नाम श्री सुखबीर सिंह आर्य (9350502175, 9540012175) को नोट कराएं।

वेद-स्वाध्याय

दिति और अदिति के मार्ग

दितेः पुत्राणामदितेरकारिषमव देवानां बृहतामनर्वणाम्।
तेषां हि धाम गभिषक् समुद्रियं नैनान् नमसा परो अस्ति कश्चन।। - *अथर्व. 7/7/1*
ऋषिः **अथर्वा।।** देवता - **अदितिः।।** छन्दः **आर्षीजगती।।**

शब्दार्थ - **दितेः पुत्राणाम्** = दिति के पुत्रों (दैत्यों) को **अदितेः अकारिषम्** = मैंने अदिति का कर लिया है **बृहतां अनर्वणां देवानाम्** =उन्हें मैंने उन महान् अपराश्रित, देवों के अव **(अकारिषम्)** = अधीन (नीचे) कर लिया हे। **तेषां हि** = उन देवों का **धाम** = तेज **गभिषक्** = बड़ा गम्भीर है, क्योंकि वह **समुद्रियम्** = नित्य शक्ति के तेज-समुद्र से उत्पन्न हुआ है, **नमसा** = नम्रता की शक्ति से युक्त **एनान्** = इन देवों से **परः कश्चन न अस्ति** = परे, बढ़कर और कोई नहीं है।

विनय- दिति और अदिति दोनों मुझमें हैं। खण्डित होने वाली विकृति (माया) दिति है और खण्डित न होने वाली प्रकृति (मूलशक्ति) अदिति है। दैत्यों और आदित्यों (देवों) की ये दोनों माताएं अपने पुत्रों द्वारा मेरे हृदय में संघर्ष किया करती है। दिति मेरे हृदय में स्वार्थ, ईर्ष्या, द्वेष, भय, काम, लोभ आदि असनातन विकारी भावों को जनित करती है और अदिति से परोपकार, करुणा, प्रेम, निर्भयता, वैराग्य, निष्कामता आदि सनातन भावों के पुत्र पैदा हो रहे हैं, पर मेरे इस हृदय के संघर्ष में मैं इन दिति के पुत्रों को, इन दैत्य भावों को, अदिति के बना देता हूं। उन महान् सनातन देवों द्वारा इन दैत्यों को दबा देता हूं, नीचा कर देता हूं। वे देव बृहत् हैं और अपराश्रित हैं; ये दैत्य (आसुरभाव) तो इन देवों के ही आश्रित हैं। संसार में ये देवभाव न हों तो ये आसुरीभाव चल ही न सकें। संसार में सत्य के आश्रय से ही झूठ चल रहा है, अतएव मैं उन सत्य-सनातन दैवीभावों (अक्लिष्ट वृत्तियों) द्वारा इन आसुरी विचारों (क्लिष्ट वृत्तियों) को सदा दबा देता हूं। यह क्यों न हो जबकि उन देवों का तेज अति गम्भीर है। वे दैवभाव अपना तेज उस अखण्ड प्रकृति (परमात्मा) के अक्षय समुद्र द्वारा ग्रहण करते हैं। अतएव मेरे क्षुद्र दुर्भाव इन दैवभावों के धाम (तेज) का पार नहीं पा सकते। इन दुर्भावों में अपनी कुछ शक्ति नहीं होती, इनका अपना कोई आधार नहीं होता; अतः कुछ समय तक उछल-कूद करके अपनी उत्तेजना और अशान्ति-सहित स्वयमेव विनष्ट हो जाते हैं। दैवभावों की अगाध नम्रता ही इन्हें हरा देती है। दैवभावों में यह राजसिक उछल-कूद व अशान्ति नहीं होती, उनकी सात्त्विक नमस् (नम्रता) में ही सबको नमा देने की अक्षय शक्ति होती है। देवों की इस नम्रता की अगाध शक्ति को हरा सकने वाली और कोई शक्ति संसार में नहीं है, अतः सचमुच इस नम्र, गम्भीर, अचलप्रतिष्ठ दैवभावों की ही सदा विजय होती हे। एवं, मेरी इस हृदय भूमि में देव-दैत्यों के संग्राम में दिति से उत्पन्न होनेवाले पुत्र अदिति (नित्यशक्ति) की अखण्डित शक्ति के अधीन हो जाते है।, उनके दैवी तेज के सामने ये दब जाते हैं, वहीं विलीन हो जाते हैं।

- साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

बस यही तो आर्यसमाज की लड़ाई है !

आज विश्व पुस्तक मेले में भाषा के स्तर पर भारत की मौजूदगी का अध्ययन करते हैं तो हम इस बात का शोर तो सुनते हैं कि हिन्दी विश्व की बड़ी भाषाओं में से एक है लेकिन क्या वास्तव में ऐसा है? दिल्ली में आयोजित पिछले चार विश्व पुस्तक मेले का मीडिया स्टडीज ग्रुप ने एक तुलनात्मक अध्ययन किया है। संस्था की रिपोर्ट बेहद चौकाने वाली रही साल 2013 के विश्व पुस्तक मेले में भाषावार शामिल 1098 प्रकाशकों में अंग्रेजी के 643, हिन्दी के 323, उर्दू के 44, संस्कृत के 18, विदेशी प्रतिभागी 30 थे। वर्ष 2017 में यह घटकर भारतीय भाषाओं की उपस्थिति और भी कम हुई।

भाषा, धर्म और संस्कार किसी भी राष्ट्र की सबसे बड़ी पूंजी होती हैं, क्योंकि यही चीजें किसी राष्ट्र को उसकी पहचान और उसका गौरव प्राप्त कराती है। दूसरी बात यह चीजें आती है उस राष्ट्र के साहित्य से। मसलन साहित्य जैसा होगा निःसंदेह राष्ट्र का निर्माण भी वैसा ही होगा। आज हमारे बच्चे क्या पढ़ते हैं एंडी और जोसेफ की कहानी? आप उनका पाठ्यक्रम उठा लीजिये और स्वयं देखिये उनके मासूम मनो पर क्या छापा जा रहा हैं? जब किसी साहित्य पतन होता है तो वह सिर्फ साहित्य तक सीमित नहीं रहता अपितु साहित्य के साथ एक संस्कृति, एक सभ्यता और कई बार तो धर्म और राष्ट्र भी खतरे में पड़ जाते हैं। यदि इस प्रसंग में गौर करें तो साहित्य जैसा दस साल पहले था अब नहीं है, हालाँकि भाषा का पतन भी साहित्य के पतन में मुख्य कारक समझा जाता है।

दरअसल भारतीय साहित्य और भाषाओं का विस्तार करने के लिए भारत सरकार ने 1957 में नेशनल बुक ट्रस्ट की स्थापना की गयी थी। इसके मुख्य उद्देश्य समाज में भारतीय भाषाओं का प्रोत्साहन एवं लोगों में विभिन्न भारतीय भाषा के साहित्य के प्रति रुचि जाग्रत करना था। जिसके तहत हर वर्ष विश्व पुस्तक मेले का आयोजन किया जाना भी शामिल है। यदि आज विश्व पुस्तक मेले में भाषा के स्तर पर भारत की मौजूदगी का अध्ययन करते हैं तो हम इस बात का शोर तो सुनते हैं कि हिन्दी विश्व की बड़ी भाषाओं में से एक है लेकिन क्या वास्तव में ऐसा है? दिल्ली में आयोजित पिछले चार विश्व पुस्तक मेले का मीडिया स्टडीज ग्रुप ने एक तुलनात्मक अध्ययन किया है। संस्था की रिपोर्ट बेहद चौकाने वाली रही साल 2013 के विश्व पुस्तक मेले में भाषावार शामिल 1098 प्रकाशकों में अंग्रेजी के 643, हिन्दी के 323, उर्दू के 44, संस्कृत के 18, विदेशी प्रतिभागी 30 थे। वर्ष 2017 में यह घटकर भारतीय भाषाओं की उपस्थिति और भी कम हुई। कुल 789 प्रकाशनों में अंग्रेजी के 448, हिन्दी के 272, उर्दू के 16, पंजाबी के 10, बांग्ला के 07, मलयालम के 06, संस्कृत 03, और 19 विदेशी प्रतिभागी शामिल थे।

हिन्दी में स्टॉल की जो संख्या दिख रही है, उनका विलेषण करें तो बड़ी संख्या में धर्म-कर्म, कर्मकांडी, जादू-टोना, अश्लील साहित्य की दुकानें हैं। जो मेले को फुटपाथी दुकान के रूप में बना देते हैं। इसके बाद यदि चर्चा करें तो पिछले कुछ सालों में विश्व पुस्तक मेले में धार्मिक संगठनों के स्टाल की बाढ़ सी आई है। हॉल के एक कोने में दलित और बौद्ध साहित्य का एक स्टाल लगा है। यहां बुद्ध की तस्वीरें, इस्लाम से जुड़े तमाम संगठन शिया हो या सुन्नी। अहमदिया शाखा का भी एक स्टाल यहां लगा हुआ मिलेगा। तमाम ईसाई और अन्य मत के लोग बड़े-बड़े स्टाल सजाये फ्री में अपनी धार्मिक पुस्तकों बाईबल इत्यादि का वितरण करते दिखाई देते हैं तो इस्लाम वाले हर वर्ष कई ट्रक ''कुरान'' गैर मुस्लिमों को फ्री में प्रदान करते हैं। इन लोगों के उद्देश्य को जानकर और मजहबी स्टाल देखकर कोई भी सनातन धर्म प्रेमी हैरान हुए बिना नहीं रह सकता।

यहां आसाराम, ओशो, रामपाल, गुरु महाराज घसीटा राम, राधा स्वामी सत्संग, माताजी निर्मला देवी, शिरडी साई ग्लोबल फाउंडेशन से लेकर तमाम बाबाओं के स्टॉल यहाँ मंदिरों और इस्लामिक स्टाल मस्जिदों की भांति सजे दिखाई देंगे। मसलन कहने का आशय यह है कि वेद क्या है, धर्म क्या है, हमारी सांस्कृतिक और धार्मिक संरचना आपको कहीं दिखाई नहीं देगी। कहीं स्टाल धर्मांतरण के अड्डे बने दिखाई देंगे तो कहीं बाबा अन्धविश्वास की लपेट लगाकर अपने भक्त जोड़ते दिखाई देंगे।

इसके बाद हॉल संख्या 7 में थीम पवेलियन बनाया जाता है जिसे बाल साहित्य के लिए आरक्षित किया जाता है। लेकिन कमाल देखिये! यहाँ भी अन्य मतों की मिशनरीज बच्चों के लिए कॉमिक्स से लेकर आर्ट बुक्स, टीनएज साहित्य, 3डी आदि से अपना प्रचार करते आसानी से दिख सकते हैं। अधिकांश साहित्य अंग्रेजी भाषा में होता है। यानि के लार्ड मेकाले का वह कथन यहाँ पूरा होता दिखता है कि किसी देश को गुलाम बनाना हो तो वहां का बचपन वश में कर लीजिये भविष्य खुद ही गुलाम हो जायेगा। शायद ही यहाँ कोई बाबा या या खुद को हिन्दू धार्मिक संगठन बताने वाले यहाँ जाकर अपने स्टाल लगाते हों? बस यही आर्य समाज की लड़ाई है जिसे वह एकजुट होकर लड़ता आया है।

अब इस स्थिति में आर्य समाज क्या करे? अक्सर बहुतेरे लोग यही सवाल दागकर सोचते हैं कि हमने सवाल खड़ा कर दिया काम खत्म? जबकि यहीं से आर्य समाज का कार्य शुरू होता है हर वर्ष आर्य समाज ही तो विश्व पुस्तक मेले में अपनी महान वैदिक सभ्यता का पहरेदार बनकर जाता है। 50 रुपये की कीमत का सत्यार्थ प्रकाश दानी महानुभावों के सहयोग से 10 रुपये में उपलब्ध कराया जाता है। गत वर्ष हिन्दी भाषा में सत्यार्थ प्रकाश ने समूचे मेले में सभी भाषाओं में बिक्री होने वाली किसी एक पुस्तक की सर्वाधिक बिक्री का रिकॉर्ड स्थापित किया था। उर्दू, अंग्रेजी व अन्य भाषाओं में सत्यार्थ प्रकाश की बिक्री इसके अतिरिक्त रही और विशेष बात यह है कि सत्यार्थ प्रकाश की यह प्रतियां मुस्लिम सहित मुख्यतः गैर आर्य समाजियों के घरों में भी गई।

इस बार आर्य समाज का हाल संख्या 7 में बच्चों के लिए विशेष स्टाल है आप खुद को सोशल मीडिया फेसबुक या व्हाट्सएप्प और अखबारों के हवाले मत छोड़िये। आपको ये अखबार मर्दाना ताकत की दवा, बंगाली बाबाओं और जादू टोने के यंत्रों के ग्राहक में बदलकर रख देंगे। इसलिए आप इस बार पुस्तक मेले जायें तो हॉल नम्बर 12-12ए में आर्य समाज के स्टाल 282 - 291 में जरूर जाइये। बच्चों को हाल नम्बर 7 में लेकर जाएँ तो स्टाल नम्बर 161 में जाने से मत चूकियेगा वहां आर्य समाज का स्टाल मिलेगा क्रांतिकारियों और देशभक्ति के कॉमिक्स से साथ वहां से भी उनके लिए वैकल्पिक सामग्री खरीद लाइये। इस कसौटी पर कसते चलिए कि कौन सी पुस्तक आपके बच्चे को बेहतर मनुष्य बनने में मदद करती है, कौन सी जहर भरती है। अपनी भाषा अपने सनातन वैदिक धर्म का रक्षक बनकर स्वयं खड़ा होने का समय है, आर्य समाज के साथ इस राष्ट्र निर्माण के यज्ञ में अपना योगदान दीजिये। वैदिक साहित्य का प्रचार ही राष्ट्र और धर्म बचा सकता है।

- सम्पादक

क्या आस्था की परिभाषा मूर्खता बनकर रह गई है!

.....आज धर्म अंधी श्रद्धाओं की गलियों में खो गया, अंधकार ने आस्था को धर्म बनकर गटक लिया गया। सब कुछ हासियें पर जा रहा है क्या लोग उतना भी नहीं बचा पाएंगे जितना मूल्यवान है? हमसे केवल वे ही लोग खुश हो सकते हैं, जिनके पास थोड़ी प्रतिभा बची है, जिनके पास थोड़ी बौद्धिक क्षमता बची है, जिनके पास थोड़ा आत्मबल है, थोड़ा आत्मगौरव है, जो थोड़े आत्मवान हैं। जो इस महान वैदिक धर्म को बचा लेने का साहस रखते हैं। उनके अतिरिक्त, हमारे साथ भीड़ नहीं चल सकती है.....

उज्जैन में 18 दिसम्बर की बीती रात चक्रतीर्थ शमशान घाट पर एक विशेष तांत्रिक अनुष्ठान हुआ। अमावस्या की रात भैरवनाथ मंदिर पर तांत्रिक बम-बमनाथ ने शराब से महायज्ञ किया। इस महायज्ञ में हजार लीटर देशी-विदेशी शराब में चढ़ाई गई। इस बेहूदे प्रदर्शन को देखने लिए भीड़ इकट्ठी हुई और कमाल देखिये इसका कोई विरोध भी नहीं हुआ। विरोध क्यों होगा? यह सब सदियों पुरानी परम्परा के नाम पर हुआ! यह परम्परावादी देश है, या कहो रूढ़िवादी देश है। यहां सिर्फ मूर्खता होनी चाहिए यदि मूर्खता और ढोंग पुराना है तो क्या कहने। ढोंग जितना पुराना उतनी ज्यादा आस्था है शायद अब धर्म की व्याख्या यही शेष रह गयी है।

महायज्ञ में भारी संख्या में भीड़ उपस्थित थी। हालाँकि यह भीड़ भारत देश के सम्बन्ध में स्वभाविक है क्योंकि जहाँ पागलपन होगा वहां भीड़ जरूर उपस्थित होगी। भला ऐसा मौका क्यों चूकना! अजीब कर्मकांड देखने की आकांक्षा तो इन्सान के अन्दर बड़ी प्रबल होती ही है। कोई और देश होता, तो इन कथित तांत्रिकों, बाबाओं को पकड़ कर पागलखाने में छोड़ देता लेकिन यह भारत है अधिकांश आबादी अभी भी परम्पराओं में जी रही है। सबका जीवन अतीत में है। कहते हैं अपनी सांस्कृतिक विरासत अक्षुण्ण रखने में कोई नुकसान नहीं है पर नुकसान तब होता है जब लोग चमत्कारी बाबाओं के ढ़ोंग, दकियानूसी परम्पराओं के चक्कर में पड़ते हैं। इससे सिर्फ एक हानि जो सबसे बड़ी होती है वह होती है धर्म की हानि।

कहा जा रहा है विश्व शांति और जनकल्याण के लिए यह अनुष्ठान करने के लिए यह महायज्ञ आयोजित किया गया। कितना अजीब है सब कुछ शांति के लिए सुरा यज्ञ? यदि शराब से शांति होती है तो क्यों न हर गली हर मोहल्ले यहां तक कि देश की सीमाओं पर भी यह शांति के केंद्र खोल दिए जाये? आर्य समाज से जुड़े होने के कारण हम रूढ़िवादी नहीं हैं, ढ़ोंगी परम्परावादी नहीं है। हम रूढ़ि-विरोधी, ढ़ोंग विरोधी हैं, इन कथित परम्पराओं के विरोधी हैं। हम अतीत के अंधविश्वासों के विरोधी हैं। हमारा साथ कौन दे? हमारा विरोध स्वभाविक है पर हम इसे स्वीकार करते हैं कि चलो हमारे कारण कुछ चहल-पहल तो हुई किसी को तो आत्मचिंतन करने का मौका मिला, इस भीड़ से कोई एक तो निकला जिसने यह कहा कि यह ढ़ोंग धर्म नहीं है। कुछ तो आंधी उठी। सदियों की अंधी ठहरी मानसिकताओं में कुछ तो हलचल हुई किसी को तो जीवन का बोध हुआ। किसी ने तो हमारे कारण सच्चे परमात्मा को जानने का आनन्द लिया।

जब मैंने उज्जैन की इस खबर को पढ़ा तो मेरे मन में एक पल को निराशा घर कर गयी पर एक दो लोगों से चर्चा की उन्होंने कहा इसे आस्था के रूप में भी देख सकते हैं? पर क्या आस्था की परिभाषा सिर्फ मूर्खता बनकर रह गयी? हम पाखण्ड के विरोधी हैं और दावे से कह सकते हैं जो जरा भी जागरूक नहीं हैं तो भारतीय कैसे हो सकता है? फिर किस गर्व से वह खुद को हिन्दू कह सकता है? मगर आज धर्म अंधी श्रद्धाओं की गलियों में खो गया, अंधकार ने आस्था को धर्म बनकर गटक लिया गया। सब कुछ हासियें पर जा रहा है क्या लोग उतना भी नहीं बचा पाएंगे जितना मूल्यवान है? हमसे केवल वे ही लोग खुश हो सकते हैं, जिनके पास थोड़ी प्रतिभा बची है, जिनके पास थोड़ी बौद्धिक क्षमता बची है, जिनके पास थोड़ा आत्मबल है, थोड़ा आत्मगौरव है, जो थोड़े आत्मवान हैं। जो इस महान वैदिक धर्म को बचा लेने का साहस रखते हैं। उनके अतिरिक्त, हमारे साथ भीड़ नहीं चल सकती है. क्योंकि हमारे पास अंधी पागल आस्थाओं का डमरू नहीं है।

हम ज्यादा आंकड़ें प्रस्तुत नहीं करते पर कौन इस बात से इंकार कर सकता है कि भारत के कई बड़े मंदिरों में शराब के रूप में प्रसाद वितरित नहीं की जाती हैं? दरअसल ये शराब नहीं बल्कि एक महान पागलपन बांटा जा रहा है, एक सामान्य इन्सान की सोच को जकड़ा जा रहा है भय से अन्धविश्वास खड़ा कर आसानी से इन्हें धर्म का चोला पहना दिया गया। बड़ा दु:ख होता है यह देखकर कि इस बौद्धिक दुनिया में देश की राजधानी के बीचो-बीच पुराना किला के पार स्थित 'प्राचीन भैरों मंदिर' देवता के प्रसाद में लोकल और इंटरनेशनल लेवल तक की शराब चढ़ाई जाती है। मंदिर के आसपास इसी वजह से तमाम भिखारी खाली गिलास लिए भटकते नजर आते रहते हैं। प्रसाद का सेवन कर चुके अधिकतर भिखारी पूरी तरह से नशे में होते हैं। नशे में धुत्त भिखारियों की लाइन में आपको बच्चों सहित हर उम्र के लोग नजर आ जाएंगे। लोगों के ज्यादा नशे में होने की वजह से कई बार यह लोग गम्भीर अपराध करने से भी नहीं चूकते। पर क्या कहें, किसे कहे? मंदिरों में जाकर वोट मांगने वाले नेताओं को? धर्म के नाम पर बाहर शराबी पियक्कड़ बैठे है अन्दर एक मूर्ति पियक्कड़ जिसे जितना जी करे उतनी शराब पिला दो, शनिवार और रविवार को यह समस्या और विकट हो जाती है क्योंकि इन दिनों काफी भक्त मंदिर में भैरो बाबा के दर्शन को आते हैं। सप्ताह के अंत के दौरान मंदिर परिसर में बोतलें और शराब के कार्टून बिखरे नजर आते हैं।

पर एक सवाल यह भी खड़ा होता है कि जागरूकता की परवाह कौन करता है? वह जो इस अंधकार में डूबा हुआ कुछ पाने के लिए हाथ में बोतल लिए खड़ा है? शायद इसके लिए स्वयं पहले, लोगों को पाखंड से बाहर निकलना होगा जानना होगा कि धर्म का इन सारी बातों से कोई सम्बन्ध नहीं हैं, उनको इसे व्यापार समझना होगा उसे जानना होगा धर्म का सम्बन्ध तो सिर्फ एक चीज से है ''वह ध्यान है।'' और धर्म की एक ही खोज है, वह ज्ञान और सत्य है। शेष सब बकवास और पाखंड है सबसे छुटकारा पा लेना चाहिए ।

-राजीव चौधरी

अपनी ओर से सत्यार्थ प्रकाश पर सब्सिडी हेतु अधिकाधिक दान करें

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 912010055423646

एक्सिज बैक, IFSC - UTIB0000223 MICR - 110211025

कृपया राशि जमा कराने के उपरान्त **श्री मनोज नेगी मो. 9540040388** को सूचित करके अपनी डिपोजिट स्लिप डाक द्वारा अथवा aryasabha@yahoo.com पर भेजकर राशि की रसीद मंगा लेवें। सत्यार्थ प्रकाश कम मूल्य पर उपलब्ध कराने के लिए दान देने वाले आर्य संस्थानों, आर्यसमाजों एवं सहयोगी आर्य महानुभावों की सूची आर्यसन्देश साप्ताहिक में प्रकाशित की जाएगी।

100 सत्यार्थ प्रकाश 10-10 रुपये में वितरित करने के लिए 2000/- रुपये सहयोग राशि की आवश्यकता है। अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अपने परिवार, आर्यसमाज और अपनी संस्था की ओर से अधिक सहयोग राशि भेजकर सत्यार्थ प्रकाश को जनसाधारण तक अधिकाधिक संख्या में पहुंचाने के लिए सहयोग दें। कृपया अपनी दान राशि नकद/चैक/बैक ड्राफ्ट के माध्यम से **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर भेजें। **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया समस्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है।** - *महामन्त्री*

बोध कथा

त्याग का सम्मान

एक था कृपणा, इतना कंजूस कि अपने-आप पर भी धेला ख़र्च नहीं करता था। लाखों का स्वामी था; फटे कपड़े पहने रहता। केवल एक अच्छी बात थी उसमें। वह सत्संग में जाता था। वहां भी उसे कोई पूछता न था। सबसे अन्त में जूतों के पास बैठ जाता। कथा सुनता रहता। भोग पड़ने का दिन आया तो सब भेंट चढ़ाने कोई-न कोई वस्तु लाये। वह कृपण भी एक मैले से रूमाल में बांध के कुछ लाया। सब लोग अपनी लाई वस्तु रखते गये, वह भी आगे बढ़ा। अपना रूमाल खोल दिया उसने। उसमें अशर्फ़ियां थीं, पौण्ड और सोना। इन्हें पण्डित जी के समक्ष उंडेलकर वह जाने लगा। पण्डित जी ने कहा-''नहीं-नहीं सेठ जी! वहां नहीं, यहां मेरे पास बैठो।''

सेठ जी ने बैठते हुए कहा-''यह तो रुपयों का सम्मान है पण्डित जी, मेरा सम्मान तो नहीं?''

पण्डित जी ने कहा-''भूलते हो सेठ जी! रुपया तो तुम्हारे पास पहले भी था। यह तुम्हारे रुपये का नहीं, त्याग का सम्मान है।''

बोध कथाएँ: वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

प्रथम पृष्ठ का शेष

91वां स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर हजारों की संख्या में.....

'अंधविश्वास को मिटाना व देश को बचाना हमारा परम कर्त्तव्य बनता है। आर्यसमाज अपनी स्थापना से पूर्व ही महर्षि दयानन्द जी के साथ मिलकर इस कार्य को करने में जुटा रहा है। ये विचार मेघालय के माननीय राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद जी ने आज के बाबाओं पर कटाक्ष व उनके कुकृत्यों का बखान करते हुए आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य, के तत्त्वावधान में आयोजित 91वें स्वामी

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर आयोजित विशाल शोभा यात्रा एवं सार्वजनिक सभा (25 दिसम्बर 2017) दिल्ली के रामलीला मैदान में व्यक्त किए। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा 'मेघालय में 80 % लोग आज इसाई बने हुए हैं जबकि वहां जितने भी राजा हुए वे सब हिन्दू थे।'

राज्यपाल महोदय ने स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा प्रदीप्त गुरुकुल शिक्षा पद्धति लागू करने पर बल दिया। राष्ट्रीय आन्दोलन में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार की अग्रणी भूमिका रही। आजादी के बाद लार्ड मैकाले की शिक्षा नीति दुर्भाग्यपूर्ण रही, जिसके दुष्प्रभाव से देश आतंकवाद, नशा, जातिवाद का दंश झेल रहा है। इस अवसर पर माननीय गंगा प्रसाद जी, राज्यपाल, मेघालय, का स्मृति चिन्ह व पीतवस्त्र से अभिनन्दन किया गया।

माननीय डॉ. सत्यपाल सिंह जी, मानव संसाधन व विकास राज्य मन्त्री, ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के कार्यों का बखान करते हुए गुरुकुल कांगड़ी स्थापना के सन्दर्भ में कहा कि स्वामी जी ने कहा था कि हमने यह संस्था सरकार के गुलाम तैयार करने के लिए तैयार नहीं की है। डॉ. सत्यपाल जी ने आगे कहा कि हमें अपने भूतकाल के ज्ञान-विज्ञान को याद करने की आवश्यकता है उसे भूलकर अन्धविश्वास को खत्म नहीं किया जा सकता। हमारी हजारों साल पुरानी संस्कृति है जब हमारे दिमागों में मन में वेद विद्या का प्रकाश होगा तो अन्धविश्वास का अन्धकार स्वत: खत्म हो जाएगा।' डॉ. सत्यपाल सिंह जी ने जानकारी देते हुए कहा कि मैंने सरकार के सम्मुख एक 5 लाख का पुरस्कार वेद विद्या प्रचार के लिए व 1-1 लाख के 5 पुरस्कार युवाओं को वेद विद्या प्रचारके लिए देने का प्रस्ताव सरकार के समक्ष रखा है।

प्रात: 8 बजे आचार्य सहदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व में बलिदान भवन में, श्री राजकुमार आर्य के संयोजन से तथा आर्य समाज नया बांस के सहयोग से यज्ञ सम्पन्न हुआ जिसमें आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली व आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के पदाधिकारियों ने बड़े ही उत्साह पूर्वक भाग लिया। यज्ञोपरान्त विशाल शोभा यात्रा का शुभारम्भ वेद मन्त्रोच्चारण एवं वैदिक जयघोष के साथ हुआ। जिसका नेतृत्व रथ पर विराजमान स्वामी धर्ममुनि जी ने किया। ओम् ध्वज को श्रीमती प्रभा आर्या सबसे आगे लेकर चल रही थीं। शोभा यात्रा साध्वी उत्तमा यति, सर्वश्री सुरेन्द्र कुमार रैली वरिष्ठ उपप्रधान, धर्मपाल आर्य, प्रधान, दिल्ली अ. प्र. सभा उपप्रधान, विक्रम नरुला, श्रीमती उषा किरण आर्य, राजेन्द्र दुर्गा, कीर्ति शर्मा, अजय सहगल, महामंत्री सतीश चड्डा, कोषाध्यक्ष, अरुण वर्मा, मंत्री, योगेश आर्य, जोगिन्द्र खट्टर, हरिओम बंसल, एस.पी. सिंह के दिशा निर्देशन में आरम्भ हुआ। शोभा यात्रा बलिदान भवन नया बाजार, लाहौरी गेट से चलकर, खारी बावली, चांदनी चौक, टाउन हाल, नई सड़क तथा अजमेरी गेट होती हुई, लगभग तीन किलोमीटर का सफर तय कर 12.50 बजे रामलीला मैदान पहुंची, जिसमें दिल्ली की समस्त आर्य समाजों, आर्य वीरदल एवं वीरांगना दलों, विभिन्न आर्य अनाथालयों, आर्य समाजी संस्थाओं के सदस्यों ने भाग लिया। आर्य विद्यालयों ने 9 सुन्दर झांकियों का निर्माण कर महर्षि दयानन्द एवं देश भक्तों के चित्रों, कलाकृतियों, वेदमन्त्रों से लिखित बैनरों, ओ३म् पताकाओं से अच्छी प्रकार सजाया हुआ था। आर्य वीर एवं वीरांगनां दल के सदस्य अपने गणवेश में सुसज्जित पंक्तिबद्ध व जयघोष करते, ईश्वर भक्ति, देश-भक्ति तथा-ऋषि भक्ति से ओत्-प्रोत् मधुर भजन संगीत से पुरानी दिल्ली का वातावरण नूतन व भक्तिमय बना रहे थे। आर्य वीर एवं वीरांगनाओं के आसन-मल्खम, भाला एवं तलवार बाजी

- शेष पृष्ठ 5 एवं 7 पर

पुस्तक परिचय

भारतीय देशभक्तों की कारावास और उनके बलिदान की कहानिया

देश में जब आजादी की बात होती है तो महात्मा गाँधी और देश के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू तक आकर रुक जाती है। क्या सच में मात्र कुछ नाम और चेहरों के दम पर अटक से कटक और कश्मीर से कन्याकुमारी तक हमने स्वराज्य स्थापित कर लिया? हर किसी का जवाब होगा नहीं! देश के लिए क्रांति की दहकती अग्नि में अपने प्राण झोंकने वाले वे माताओं के लाल, देश के सच्चे सपूत तो कोई और ही थे। जिनके नाम भी राजनैतिक इतिहासकारों ने मिटा दिए उन्हें श्रद्धांजली देना तो दूर आज लोग उन्हें भूलते जा रहे हैं। भारतीय स्वाधीनता के आन्दोलन के सिपाहियों पर लिखी यह एक ऐसी पुस्तक है जो हर घर में रहनी चाहिए। यह देशभक्ति के साथ-साथ नई पीढ़ी का मार्गदर्शन भी करेगी साथ ही उसे बहकने से भी बचाएगी। जिस बच्चे के हृदय में अपने देश के प्रति संस्कार होंगे वह कभी गुमराह नहीं हो सकता, माता-पिता की अवहेलना नहीं कर सकता। अपनी भावी पीढ़ी का निर्माण कीजिये हमारी प्रार्थना है।

पुस्तक का एक अंश-जेल में करतार सिंह साराभा ने कहा जिस दिन गुरु की यह वाणी पढ़ी थी उसी दिन मैंने देश को आजाद करने की ठान ली थी। 'मेरे साथियों में सब देशभक्ति के गीत गाते

रहते थे। लोग पूछते थे कि क्या तुम किसी बारात में जा रहे हो या फांसी पर लटकने की तैयारी में हो? वे लोग कभी इस फांसी की खुशी को नहीं समझ सकते थे....'
भारतीय देशभक्तों की कारावास और उनके बलिदान की कहानी।

यह पुस्तक स्वाध्याय के लिए व ईष्ट मित्रों व रिश्तेदारों को गणतन्त्र दिवस व स्वाधीनता दिवस पर भेंट करने हेतु आप भी प्राप्त कर सकते हैं-

पुस्तक प्राप्ति के लिए सम्पर्क करें:-
वैदिक प्रकाशन,
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001,
मो. नं. 9540040339

मातृशक्ति

व्यवहार

आहार के विषय में हम अपनी माताओं के आर्य सन्देश के पिछले अंकों में बतला चुके हैं। अब बात आती है व्यवहार की। हमारे पुराने बुजुर्ग कहते थे कि आहार और व्यवहार का चोली दामन का साथ है। इसलिए आहार की बात है और व्यवहार की बात न हो यह गलत होगा तो आइये आर्य सन्देश के इस अंक में हम बात करते हैं अपने बच्चों के व अपने स्वयं के व्यवहार की।

व्यवहार से तात्पर्य सोने, उठने बैठने, चलने आदि का वह उचित ढंग जो हमारे भोजन पचाने में सहायक हो तथा हमारी दिनचर्या और प्रतिदिन नियमपूर्वक उचित मात्रा में व्यायाम। आज हमने सोने बैठने के ढंग को बहुत बिगाड़ लिया है। यही कारण है कि जहां हमारा भोजन पक्वाशय में जाकर सरलता पूर्वक और ठीक समय पर पच जाना चाहिए था, वहां आज हमारा भोजन बहुत कठिनता से पचता है और वह भी चूर्ण, गोली आदि कृत्रिम साधनों द्वारा। आप सोने के ढंग को ही लीजिए, सोना हमेशा बिल्कुल सीधा तथा करवट से चाहिए और वह भी विशेषकर बाई करवट से, इससे भोजन भी भली प्रकार पच जाता है और वीर्याशय पर अधिक दबाव न पड़ने के कारण स्वप्न दोष आदि वीर्य विकार भी नहीं होते। किन्तु इसके विपरीत कोई तो पीठ के भार हाथ-पैर फैलाकर बिल्कुल चित्त ही लेट जाता है, कोई यदि करवट से सोता भी है तो सीधा न सो कर घुटनों को मोड़कर और पेट के साथ सटाकर फुटबॉल के समान गोल मटोल बनकर सोता हे। इन सब सोने के विकृत तरीकों से न तो हमारा भोजन ही भली प्रकार पचता हे और न फेफड़ों और हृदय में रक्त का अभिसरण भली प्रकार से हो पाता है और न ही प्राण शक्ति, जोकि शरीर में जीवन का मुख्य साधन है, उसका भी भली प्रकार से संचार होता है। यही अवस्था हमारे चलने, फिरने, उठने, बैठने आदि की है। आज हमारी प्रत्येक जीवनोपयोगी क्रिया तथा चेष्टा का ढंग विकृत हो गया है। यही कारण है कि जो व्यवहार हमारे स्वास्थ्य तथा बल, बुद्धि की वृद्धि की प्राप्ति में साधक बनना चाहिए था, वह आज बाधक बन रहा है। व्यवहार का दूसरा भाग है- दिनचर्या

दिनचर्या : शारीरिक स्वास्थ्य को ठीक रखने तथा सदा नीरोग रहने के अभिलाषी को अपनी दिनचर्या को अवश्य ठीक करना चाहिए। उसकी दिनचर्या एक ऐसी आदर्श दिनचर्या हो कि जिसके द्वरा अनायास ही शरीर के स्वास्थ्य और बल का विकास होता जाये। प्रात: उठने से लेकर रात्रि-शयन करने तक हमारी आदर्श दिनचर्या कैसी हो, इसका संक्षिप्त दिग्दर्शन हम पाठकों के लाभार्थ यहां देना उचित समझते हैं।

- क्रमश:

आदर्श गृहस्थ जीवन : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

से युद्ध कौशल प्रदर्शन कर रहे थे। बस, टैम्पो-ट्रक आदि बैनरों से सुसज्जित आर्य समाजों की टोलियां जयघोष एवं भजन कीर्तन तथा प्रेरक झांकियों से सुशोभित एवं मनोहारी प्रतीत हो रही थीं। दिल्ली के विभिन्न आर्य विद्यालयों व गुरुकुलों ने झांकियां और नुक्कड़ नाटिकाओं द्वारा बहुत सुन्दर आर्यसंदेश जनसाधारण तक पहुंचाने का प्रयास किया।

इस श्रृंखला में 9 झाकियां - महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, आर्यसमाज शादीखामपुर, आर्य शिशुशाला आर्यसमाज ग्रे. कैलाश-1, आर्य पब्लिक स्कूल आर्यसमाज श्री निवासपुरी, दयानन्द आदर्श विद्यालय आर्यसमाज तिलकनगर, आर्य पब्लिक स्कूल आर्यसमाज मालवीयनगर, आर्यसमाज प्रीतविहार, आर्यसमाज रोहिणी सै. 7 व आर्यसमाज कीर्तिनगर बधाई के पात्र हैं। पूरे रास्ते में यज्ञ की झांकी, आर्यसमाज रोहिणी सै. 7 तथा सत्यार्थ प्रकाश की झांकी, आर्यसमाज कीर्तिनगर प्रसाद बांटते हुए जा रही थीं। इन झाकियां में प्रथम महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, आर्यसमाज शादीखामपुर तथा द्वितीय आर्य शिशुशाला आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-1 स्थान रहा।

शोभा यात्रा में युवा आर्य महिलाओं ने अपनी स्कूटियों पर सशक्त नारी सशक्त भारत का संदेश देने का प्रयास किया क्योंकि मानव जीवन में नारी की महत्वपूर्ण भूमिका है यहीं निर्देश महर्षि देव दयानन्द जी ने भी सभी को दिया है। शोभा यात्रा के रास्ते में आर्यसमाज सुर्दशन पार्क, ग्रेन मर्चेन्ट एसो. नया बाजार, आर्य समाज नयाबांस, महाशय धर्मपाल महाशियां दी हट्टी, आहूजा परिवार कटरा नील, आर्य समाज दीवान हॉल, पुलबंगश, सीताराम बाजार प्रीतविहार, रानीबाग, सैनिक विहार, सै. 7 रोहिणी, प्रशान्त विहार व कई अन्य मार्केट एसोसिएशनों ने विभिन्न स्थानों पर न केवल स्वागत किया बल्कि दूर-दूर से आये आर्यजनों तथा विभिन्न विद्यालयों व गुरुकुलों के विद्यार्थियों को प्रसाद भी वितरण किया। यह शोभा यात्रा 12.50 बजे रामलीला मैदान पहुंचकर बृहत सार्वजनिक सभा में परिवर्तित हो गई। जिसमें वरिष्ठ अधिकारी एवं नेतागण उपस्थित रहे।

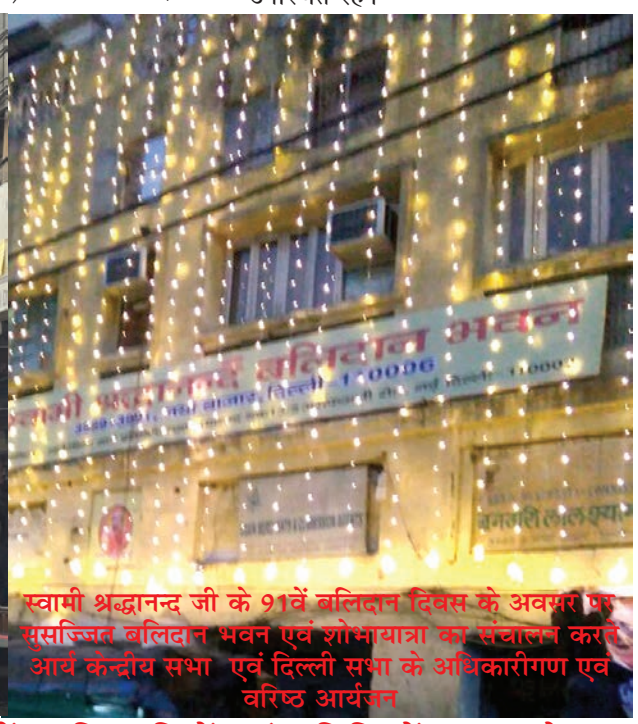

स्वामी श्रद्धानन्द जी के 91वें बलिदान दिवस के अवसर पर सुसज्जित बलिदान भवन एवं शोभायात्रा का संचालन करते आर्य केन्द्रीय सभा एवं दिल्ली सभा के अधिकारीगण एवं वरिष्ठ आर्यजन

बलिदान दिवस शोभायात्रा के उपरान्त विशाल जन सभा में आर्य विद्वानों, अधिकारियों एवं अतिथियों का उद्बोधन

डा. विनय विद्यालंकार

श्री धर्मपाल आर्य

सुश्री मोनिका अरोड़ा

श्री विनय आर्य

डॉ. कृष्ण गोपाल

श्री ओम प्रकाश पाण्डेय

श्री सुरेन्द्र कुमार रैली

श्री कीर्ति शर्मा

मेघालय के महामहिम राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद जी का स्वागत करते महाशय धर्मपाल जी। साथ में हैं दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्री सतीश चड्डा, सुश्री मोनिका अरोड़ा एवं श्री प्रेम अरोड़ा जी।

बलिदान दिवस शोभायात्रा में सम्मिलित विभिन्न झांकियां

Veda Prarthana - 25

Be Generous and You will Find Happiness in Life

- Acharya Gyaneshwarya

न वा उ देवाः क्षुधमिद्वधं ददुरुता शितमुप गच्छन्ति मृत्यवः।
उतो रयि पृणतो नोप दस्यति-
उताऽपृणन् मर्डितारं न विन्दते।।

Na va u devah kshudham it vadham daduh ut ashitam up gachchhanti mrtyavah. Uto rayih prnato na upa dasyati uta aprnan marditaram na vindate.
(Rig Veda 10:117:1)

Devah Virtuous persons with divine values tell us that according to natural order of things, na va u kshudham not only hungry (poor) people vadham it daduh suffer misery/death ut ashitam but well-fed and wealthy persons up gachchhanti mrtyavah also suffer misery and/or death. Uta prnato rayih Persons who are generous and donate their wealth for deserving persons and causes, na upa dasyati their wealth is not diminished, instead it spreads for the donor and for the good of mankind, uta aprnan on the other hand miserly/ungenerous persons marditaram na vindate make no true well-wishers or friends and remain unhappy.

Nobody who is born has lived for ever and the death of the physical body is a permanent event. It is common sense as well as according to the natural order of things, a hungy and starved person who does not get sufficient food or water for a prolonged period will die. Nevertheless, even persons who are well fed and get adequate food and water will eventually die because of other reasons. In addition, there are many miserable conditions in life in which while a person is technically alive, yet metaphorically one may call them dead e.g. an anencephalic child born with literally no brain, severe head trauma followed by a totally vegetative physical sate in which a person has no awareness, advanced cancer with extensive metastasis in the body including brain. Similarly, miserable conditions in life, where a person is suffering immensely mentally or physically, in the Vedas at many places (in addition to the natural death) have been called mrtyu (also mrityu) such as extreme depression, fear, anxiety, unhappiness or emptiness of life. The cause of such suffering/ misery is often being extremely self-centered or being extremely greedy with no regards or concern for the needs of others. Persons who work very hard day and night for their pesonal material prosperity, but never share it with those who are needy, or even seriously think in their mind of others' welfare, or look down at poor persons with disdain, such persons are already suffering a spiritual death. Though physically alive, many such persons are emotional wrecks and suffer from depression, addiction, and/or lack of true friends. Their inner pain and suffering is similar to the suffering of a physically dying person.

Most hunan beings who want to be happy, contented and fulfilled in life need not only sufficient wealth to buy food, clothing and shelter but slso need to give and receive true love, caring, trust, respect, recognition and empathy of other persons including immediate family members, friends, neighbors and colleagues at work. A person may be extremely wealth and may have substantial material prosperity but if he/she due to hishjer selfishness and/ or vanity is rejected by genuine friends, caring relatives, neighbors and the society in general, then he/she will feel isolated, unhappy, unfulfilled and suffer a living death. Some wealthy movie stars in Hollywood or Bollywood may serve as an example of such persons.

Therefore, it is essential that we all participate and share in the prosperity, welfare and happiness of our family, friends, society and nation based upon our knowledge, physical and financial abilties. Even if we have to suffer some hardship we should help others with our body, words, mind and wealth. Also, we must not restrict our commitment to our immediate family members, relatives and friends but do our utmost to help our society and nation as well as extend it to the whole world. If we do not care for the society at large or the nation (as is currently the case among most persons in India and most of the world) If then why should we experct help from others at the time of our need such as when a major calamity like eaarthquake, floods or storms affect us. therefore, if we want to be truly happy and contented in life then it is our duty to first help others become happy. We must inculcate in ourselves kindness and caring towards others as well as we must inspire, encourage and give advice to those who need our help so they can further progress in their lives and find happiness and fulfillment. Only, in this manner of mutual help and caring can a society, community and a nation find peace, happiness and harmony.

It is our responsibility that for the welfare and progress of all in the community where we live, be it at the village, town, city or nation level, to do selfless service to te best our ability at every opportunity we get. Many persons have the impression and belief that if we give our money and/or spend our time and energy for charitale causes and the welfare of others, our own personal financial resources will diminish as well as we could have better spent our time and energy for our personal goals. However, this is a mistaken belief because the personal joy one receives while doing selfless service for others, as well as the joy of receiving thanks and recognition from those who have been helped and by the noble persons of the society far outweighs the personal sacrifice we may have made.

A lot of wealth of the rich persons in most societies and nations is lying stale or is spent on material baubles of limited value. If the same money was spent in a generous manner to help the less fortunate members of the society to find meaningful jobs and learn skills which strengthen and morally uplift a society (not diminish morality), then the society as whole will be more prosperous and full of harmony. Then all societal members feel valued as productive and participating members of the society which promotes friendliness and happiness among all. God in His message to mankind in this mantra encourages us to be generous and share our wealth and prosperity with others. Therefore, come friends let us share with others whatever extra money we have that is not being used in a productive manner. Dear God, our prayer to You is: Please inspire us and give us Your grace whereby we succeed in our goal of becoming more generous and selfless in our actions so that our society and in return we ourselves have more happiness and harmony.

(For benefits of virtuous conduct in life also see mantra#7, 9, 19, 24, 26, 27 and 29)

To be continued...

आओ ! संस्कृत सीखें

समास प्रकरण - 36

गतांक से आगे....

बहुव्रीहि समास : अन्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिः इस समास में दो या दो से अधिक शब्द मिलकर नया शब्द बनाते हैं जो समास हुए शब्दों के अर्थों से अन्य अर्थ को कहता है। इसकी पहचान यह है कि जहां अर्थ करने पर जिसको, जिसने, जिसका, जिसमें आदि अर्थ निकले।

उदाहरण- पीतम् अम्बरं यस्य सः=पीताम्बरः । यहां ''पीतम्'' व ''अम्बरम्'' मिलकर पीताम्बर शब्द बना रहे हैं जिसका अर्थ पीतम्(पीला) व अम्बर(वस्त्र) से भिन्न पीला है वस्त्र जिसका वह= पीताम्बरः होगा।

2. प्राप्तम् उदकं यं सः= प्राप्तोदकः।
3. हताः शत्रवः येन सः= हतशत्रुः।
4. दत्तं भोजनं यस्मै सः= दत्तभोजनः।
5. पतितं पर्ण यस्मात् सः= पतितपर्णः।
6. दश आननानि यस्य सः= दशाननः।
7. वीराः पुरुषाः यस्मिन् सः= वीरपुरुषः।
8. धनुः पाणौ यस्य सः= धनुष्पाणिः।
9. पुत्रेण सह यः= सपुत्रः।
10. विनयेन सह यः= सविनयः।

द्वन्द्व समास : (उभयपदार्थप्रधानो द्वन्द्वः) इस समास में ''च''के अर्थ में समास होता है अर्थात् समस्तपद का अर्थ करने पर ''और'' का अर्थ निकलता है। जिन शब्दों के बीच समास होता है उन सभी शब्दों के अर्थ की प्रधानता रहती है।

- क्रमशः -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय
मो. 9899875130

प्रेरक प्रसंग

एक बार ऐसा भी हुआ

धाराशिव में आर्यसमाज का अपना मन्दिर अब तो है, पहले नहीं था। आर्यसमाज के उत्सव एक पौराणिक मन्दिर में हुआ करते थे। निज़ाम के लाडले मुसलमान आर्यसमाज के उत्सव पर आक्रमण करते ही रहते थे। उदगीर, लातूर तथा दूर-दूर के आर्यवीर धाराशिव के उत्सव को सफल बनाने के लिए आया करते थे।

एक बार श्यामभाई वेदी पर बैठे थे। अन्य आर्यजन यथा- डॉ. डी. आर. दास (अब श्री उत्तममुनि वानप्रस्थ) भी साथ बैठे थे। प्रचार हो रहा था। मुसलमानों की एक भीड़ शस्त्रों से सुसज्जित नारे लगाती हुई वहाँ पहुँच गई। सुननेवाले सुनते रहे। रक्षा के लिए नियुक्त आर्यवीर दो-दो हाथ करने के लिए तैयार थे ही। इतने में भीड़ में से कुछ ने कहा, ''देखते क्या हो, मार दो श्यामभाई को।'' यह कहते हुए कुछ आगे बढ़कर रुक गये। किसी ने कहा, ''कहाँ है श्यामलाल! मार दो।''

श्री उत्तममुनिजी ने हमें बताया कि हम यह देखकर दंग रह गये कि यह भीड़ इकदम रुक क्यों गई। जो श्यामलाल को मार दो, मार दो चिल्ला रहे थे, उनमें से किसी को यह साहस क्यों न हुआ कि भाईजी पर बर्छे, भाले, तलवार या लाठी का ही वार करें। हमारे व्यक्ति सामना तो करते परन्तु वे भाईजी के शरीर पर चोटें तो लगा सकते थे, मार भी सकते थे।

भाईजी जैसे बैठे थे, वैसे ही बैठे रहे। उनका कहना था कि प्रचार रुकना नहीं चाहिए। इसलिए बोलनेवाला बोलता रहा। आक्रमणकारी रुके क्यों? जब भाईजी की आँखों-से आँखें मिलाई तो रक्त-पिपासु दंगइयों का साहस टूट गया। निर्मल आत्मा, ईश्वर विश्वासी, निर्भय, शान्तचित श्यामभाई के नयनों की ज्योति को देखकर वे आगे बढ़ने का साहस न बटोर सके।

संसार में कई बार ऐसा भी होता है कि पापी-से पापी पाषाण-हृदय भी किसी पवित्र आत्मा के सामने जाकर पाप-कर्म करने का साहस नहीं कर पाता। यह भी एक ऐसी ही घटना है।

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

पृष्ठ 5 का शेष

91वां स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर .....

इस शोभायात्रा में श्री बृहस्पति आर्य की देखरेख में आर्य वीरों ने अनुशासन की सुन्दर व्यवस्था बनाई, शोभायात्रा में विभिन्न आग्र वीरदल की शाखाओं ने भाग लिया और पूरे वर्ष जो प्रशिक्षण प्राप्त किया उनका प्रदर्शन करते हुए शोभायात्रा की शोभा बढ़ाई जिसें प्रमुख आर्य समाजों-कीर्ति नगर, विकासपुरी, सी-3 जनकपुरी, मंगोलपुरी, सागरपुर, नांगलराय, बिन्दापुर, रामाविहार, जैन नगर, सुखवीर नगर, मोती नगर, पू. पंजाबी बाग, रानीबाग, सन्देश विहार, प्रीत विहार, जनकपुरी, सूरजमल विहार, व अन्य आर्य दलों का सहयोग रहा। इस शोभायात्रा में गुरुकुल गौतम नगर, इन्द्रप्रस्थ, फरीदाबाद, नरेला, खेड़ाखुर्द, एम ब्लाक आनन्द विहार व अन्य गुरुकुलों के ब्रह्मचारियों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर विशाल सार्वजनिक सभा का आयोजन दिल्ली के ऐतिहासिक रामलीला मैदान में किया गया जिसकी अध्यक्षता महाशय धर्मपाल (चेयरमैन एम.डी.एच. ग्रुप) ने की। मंच संचालन श्री सुरेन्द्र रैली, श्री विनय आर्य व सतीश चड्डा ने किया। इस सभा का मुख्य विषय अन्धविश्वास मिटाओ देश बचाओ रखा गया था। सभा का आरम्भ ईश स्तुति व भजनोपदेशक आचार्य मोहित शास्त्री व उनके साथी श्री योगेश ने अपने भजनों के माध्यम से किया। मंच पर उपस्थिति आर्य जगत् के विद्वत्गण एवं संन्यासी वृन्द मंच को शेभायमान कर रहे थे जिनका पीत वस्त्र, शॉल व स्मृति चिन्ह से सम्मान किया गया।

स्वामी धर्ममुनि जी ने अपने आशीष वचनों में स्वामी श्रद्धानन्द जी के किये कार्यों पर प्रकाश डालते हुए जोर देकर कहा कि आज भी गुरुकुल विद्या पद्धति का महत्त्व बहुत महत्त्वपूर्ण है और इसकी आवश्यकता भी है।

आर्य जगत् के विद्वान व समारोह के प्रमुख वक्ता डॉ. विनय विद्यालंकार जी, प्रधान, उत्तराखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने उद्बोधन में कहा कि 'स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती महान् सुधारक थे, जिन्होंने देश व समाज हित में अपनी समस्त सम्पत्ति दान कर दी व अपने दोनों बच्चों को गुरुकुल में दीक्षित कर, संसार को वैदिक ज्ञान दिया।' डॉ. विनय ने अपने उद्बोधन में आगे कहा कि उन्होंने कहा 'गुरू ही ब्रह्मा गुरू ही विष्णु इस श्लोक ने इन बाबाओं को प्रोत्साहित किया है इसी श्लोक का लाभ उठाकर इन पाखण्डी बाबाओं ने धर्म के नाम पर महिलाओं का शोषण किया है।' उन्होंने कहा कि 'हमें अपने इतिहास को सदैव याद करना होगा। यदि इतिहास को स्मरण नहीं करेंगे तो फैले पाखण्ड और अंधविश्वास को खत्म नहीं कर पाएंगे।'

आर्य केन्द्रीय सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री सुरेन्द्र रैली ने आर्य जनों को सम्बोधित करते हुए कहा कि 'हमें आज जितना डर अपने पड़ोसी देशों से नहीं है जितना कि अपने यहां के बाबाओं से है। हम अपने परिवार के सदस्यों को वैदिक शिक्षा, संस्कृति व धर्म से अवगत कराना बहुत आवश्यक है जिससे वे इन पाखण्डी बाबाओं के चक्रव्यूह में न फंसें तथा अपनी जिम्मेदारियों को समझते हुए आर्य समाज व समाज की उन्नति करें।

श्री धर्मपाल आर्य, प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने स्वामी श्रद्धानन्द के कार्यों को स्मरण करते हुए कहा कि 'राष्ट्र हितैषी स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान देश के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है जिसे कोई नहीं मिटा सकता।' स्वामी जी ने गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति को पुनर्जीवित किया, लेटेस्ट शिक्षा नीति को पुनर्जीवित किया। उस शिक्षा पद्धति की आज बहुत अधिक आवश्यकता है।'

सुश्री मोनिका अरोड़ा जी, सलाहकार-भारत सरकार, सर्वोच्चय न्यायालय ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में महिलाओं को अंधविश्वास व पाखण्ड निर्मूलन में आगे आने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि जो तुझमें है वो मुझमें है, कीट-पतंगों में.. मुगलों का ध्येय हिन्दू समाज के सम्मान को तोड़ना था तथी धर्म स्थलों पर मस्जिदों का निर्माण हुआ।'

महामन्त्री श्री विनय आर्य जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस एक संकल्प दिवस के रूप में मनाना चाहिए 'संकल्प लें कि आज हम किसी को भी क्रिसमस की बधाई नहीं देंगे।' श्री विनय आर्य ने जानकारी देते हुए बताया कि 2018 में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली में होना है जिसमें 36 देशों के लोग और भारत के हर प्रान्त के लोग एकत्र होंगे। इस महासम्मेलन की तिथि का निर्धारण 20 जनवरी 2018 को होगा। इस अवसर पर विनय आर्य जी ने प्रस्ताव रखा कि जिस प्रकार आर्थिक भ्रष्टाचार की लड़ाई में सारा देश मोदी जी के साथ है उसी प्रकार आज देश में बाबाओं द्वारा फैलाए जा रहे अधर्म को 'धार्मिक भ्रष्टाचार' की श्रेणी में रखते हुए एक कानून बनाया जाए और इसे भारत सरकार द्वारा खत्म किया जाए जिसमें आर्य समाज सरकार के साथ है।' इस प्रस्ताव को सर्वसम्मति से पास किया गया।

इस अवसर पर समाज के मूर्धन्य विद्वान् एवं कार्यकर्त्ताओं में डॉ. विनय विद्यालंकार सुपुत्र महाशय लोटन सिंह आर्य श्री वेदप्रकाश कथूरिया स्मृति पुरस्कार, श्री सुभाष कोहली सुपुत्र श्री तिलक राज कोहली को, पं. ब्रह्मानन्द शर्मा आर्य कार्यकर्त्ता पुरस्कार, श्री चतर सिंह नागर सुपुत्र महाशय हरलाल सिंह को श्री लख्मी चन्द भूरो देवी स्मृति पुरस्कार व श्री रामलाल आहूजा सुपुत्र श्री झांगी राम आहूजा को महात्मा प्रभुआश्रित स्मृति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर डॉ. विवेक आर्य (शिशु रोग विशेषज्ञ) के सहयोग से प्रकाशित एवं श्री विद्यासागर गर्ग द्वारा रचित अंग्रेजी पुस्तक 'नो बाई वेदाज़' का उपस्थित अतिथियों द्वारा विमोचन किया गया।

इस अवसर पर अपार जनसमूह जो इस विशाल कार्यक्रम में भाग लेने, सुबह-सुबह बिना भोजन किये आते हैं, उन सबके लिए शोभायात्रा के मार्ग में लगभग 14-15 स्थानों पर श्री नरेन्द्र गांधी आजाद मार्केट ने पानी की नि:शुल्क व्यवस्था, श्री प्रवीन सुराना ने पावभाजी का स्टाल, श्री जितेन्द्र भाटिया ने पुलाव का नि:शुल्क स्टाल लगाकर, आर्य समाज डी ब्लाक विकासपुरी के अधिकारियों ने चाय व पुलाव की नि:शुल्क व्यवस्था, भोजन व्यवस्था की सेवा वेद प्रचार मण्डल उत्तर-पश्चिमी दिल्ली के अधिकारियों ने विशेष कर श्री सुरेन्द्र आर्य, श्री देवेन्द्र आर्य, श्री वीरेन्द्र आर्य, श्री सुरेन्द्र चौधरी, श्री नरेश पाल, श्री नीरज आर्य एवं इनके साथियों ने महर्षि के ऋण से उऋण होने का प्रयास किया।

बलिदान दिवस की व्यवस्थाओं के लिए सर्वश्री धर्मपाल आर्य, विनय आर्य, ब्रजेश आर्य व उनका दल, श्री रणधीर आर्य, पंकज आर्य, श्रीमती इंदू, श्रीमती अंजू, श्रीमती शशी व इनके साथी, राजेन्द्र दुर्गा, कीर्ति शर्मा, अजय सहगल, योगेश आर्य, जोगिन्द्र खट्टर, एस.पी. सिंह, हरिओम बंसल, चतर सिंह नागर, जय प्रकाश शास्त्री, आ. सहदेव शास्त्री, दिनेश शास्त्री, श्री अरुण प्रकाश शास्त्री, श्री सन्दीप आर्य तथा श्री अशोक कुमार का विशेष योगदान रहा, सभी दानदाताओं व सहयोगियों का साधुवाद है। इन सबका बहुत-बहुत धन्यवाद।

- सतीश चड्डा, महामन्त्री

आर्य समाज गांधीधाम का 64वां वार्षिक अधिवेशन

आर्य समाज गांधीधाम अपना 64वां वार्षिक अधिवेशन 12 से 14 जनवरी 2018 को महर्षि दयानंद मार्ग झण्डा चौके पास गांधीधाम कच्छ गुजरात में आयोजित कर रहा है। प्रत्येक कार्यक्रम के पूर्व अध्यक्ष, संचालक, वक्ता व अतिथियों के नाम घोषित किये जाएंगे। सम्मेलन के विषय कार्यक्रम से 2 दिन पूर्व निधारित किये जाएंगे। - *गुरुदत्त शर्मा महामंत्री*

Arya Bride

Suitable match for Arya Punjabi Handsum , fair boy, never married 5'10", DOB 7-7-75, 23:45 hrs. Delhi. B.Com (D.U), Professional in BMS,Own settled Electronic business (a Pvt Ltd Comp.) Income 6 Lacs p.a. Own House. Seeks culture & respectable family. No dowry & Mail girls profile and photo at **deep5914@gmail.com**. Tel - 9810414037. Advt.

अत्यावश्यक सूचना : यज्ञ पर शोध

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने निश्चय किया है कि यज्ञ की विधि और उसकी वैज्ञानिकता पर अधिक शोध किया जाए। इसके लिए यज्ञ और उसकी वैज्ञानिकता में रुचि रखने वाले अथवा कुछ शोधकार्य कर चुके या करने की इच्छा करने वाले आर्यजन अपने नाम, मोबाईल नं. और ईमेल आईडी भेजने की कृपा करें। जिनके पास पहले से ही विभिन्न व्यक्तियों और संस्थाओं द्वारा किये गये शोध के कुछ परिणाम हों अथवा प्रकाशित लेख हों उनकी प्रति भी यथाशीघ्र भिजवाने की कृपा करें। आगामी शोध कार्य आर्य समाज स्थापना दिवस के दिन से आरम्भ किया जाने का प्रस्ताव है अत: उपर्युक्त जानकारी शीघ्रातिशीघ्र सभा कार्यालय को भिजवाने की कृपा करें।

-ईश कुमार नारंग, संयोजक, 9911160975

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 Email : aryasabha@yahoo.com

वैवाहिक विज्ञापन

आर्य वधू चाहिए

दिल्ली के प्रतिष्ठित आर्य परिवार के युवक, एम.सी.ए., डिप्लोमा (फोटोग्राफी), 30 वर्ष, लम्बाई 5'8'', सांवला, फोटोग्राफर, शाकाहारी, आय औसतन 50 हजार मसिक, हेतु आर्य परिवार की समकक्ष, सुशिक्षित वधू चाहिए। जाति-दहेज का कोई बन्धन नहीं। इच्छुक परिवार सम्पर्क करें-

मो. 9643152079, 9868997599, 9873988003, 011-27018041

Email : rajeev98739@gmail.com, savita595@gmail.com

आर्य सन्देश के आजीवन सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त आजीवन सदस्यों की सूचनार्थ निवेदन है कि आर्यसन्देश का आजीवन शुल्क 10 वर्ष के लिए होता है, किन्तु सभा की ओर से अभी किसी भी सदस्य की सदस्यता को निरस्त नहीं किया गया है। आर्यसन्देश साप्ताहिक आपका अपना पत्र है, जिसके सफल एवं निरन्तर प्रकाशन में आपका सहयोग सादर अपेक्षित है। अत: ऐसे समस्त सदस्यों, जिन्होंने 2007 से पूर्व आजीवन सदस्यता ग्रहण की हो वे अपना आगामी 10 वर्षीय शुल्क 1000/- रुपये भेजकर तत्काल अपनी आजीवन सदस्यता का नवीनीकरण 2027 तक करवा लेवें, जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें। - *सम्पादक*

सोमवार 25 दिसम्बर, 2017 से रविवार 31 दिसम्बर, 2017
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.एन.डी.)–11/6071/2015–2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 28/29 दिसम्बर, 2017
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0सी0) 139/2015–2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 27 दिसम्बर, 2017

अवश्य देखें आर्यसमाज की वैबसाइट

अपने विवाह योग्य बच्चों का आर्यसमाज मैट्रीमोनी पर पंजीकरण कराएं : आर्य परिवार का रिश्ता पाएं

उच्च आय वर्ग एवं उच्च शिक्षित प्रोफेशनल आर्य युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

पंजीकरण शुल्क : 800/- रुपये 4 फरवरी, 2018
आर्यसमाज बी ब्लाक जनकपुरी, नई दिल्ली-110058

प्रतिष्ठा में,

लगातार बढ़ रहे हैं आर्यसमाज YouTube चैनल के दर्शक

40 लाख से ज्यादा लोगों ने देखा अब तक

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें।

यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना चाहते हैं तो घंटी बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।

यदि आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। - महामन्त्री

जुड़िए आर्यसमाज के फेसबुक से
जोड़िए अपने मित्रों को और
दीजिए सन्देश आर्यसमाज का

Arya Sandesh
www.facebook.com/samajaryasandesh

फेसबुक : आर्यसन्देश साप्ताहिक

Arya Samaj Facebook
www.facebook.com/arya.samaj

फेसबुक : आर्यसमाज

Vedic Prakashan
www.facebook.com/vedicparkashan

फेसबुक : वैदिक प्रकाशन

इन्हें कौन नहीं जानता!

इनके जीवन की हकीकत जानिये कहानी उन्हीं की जुबानी

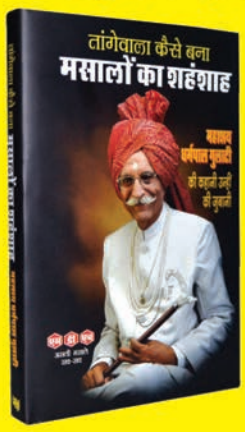

मूल्य: रु0: ~~325/-~~ 150/- पृष्ठ: 240/-

नई दिल्ली से कुतुबरोड़ तक एक तांगा चलाने वाला कैसे बना मसालों का शहंशाह

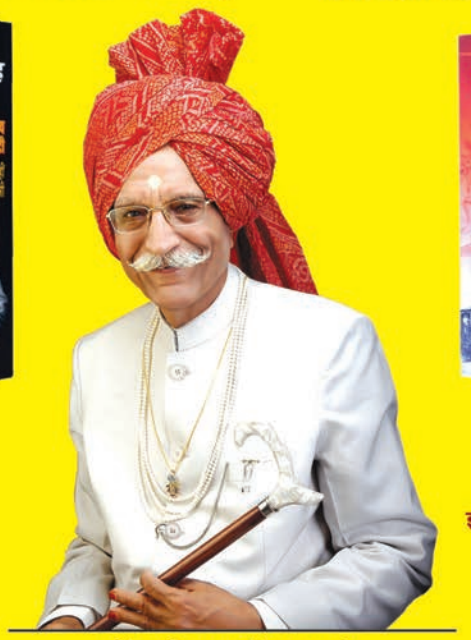

इनके जीवन को नई दिशा दिखाने वाले सफलता प्राप्ति के मूलमंत्र

मूल्य: रु0: ~~350/-~~ 200/- पृष्ठ: 168/-

इस पुस्तक का एक-एक अध्याय आपके जीवन को नई दिशा प्रदान कर सकता है।

(चेयरमैन, एम.डी.एच. ग्रुप)

"मैंने जिस तरह कठिन परिस्थितियों से संघर्ष करके सफलता प्राप्त की है वह लोगों के लिए भी मार्गदर्शक साबित हो सकती है।
आप इन किताबों को पढ़ें और मुझे अपने विचार लिख भेजें।
आपके पत्र की प्रतीक्षा में"

महाशय धर्मपाल

MDH असली मसाले सच-सच

-: पुस्तक मंगाने के लिए कृप्या लिखें अथवा फोन पर सम्पर्क करें :-

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919 9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015, 011-41425106-07-08 www.mdhspices.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह